Vol 6 Issue 3 Sept 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor :4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 3 | September - 2016

GRT Golden Research Thoughts

वैश्वीकरण तथा भारतीय व्यापार

अंशु भारद्वाज
पीएच.डी. (अर्थशास्त्र)

1. क्या है वैश्वीकरण :–

वैश्वीकरण किसी देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना है। यह वह प्रक्रिया है, जिसमें विश्व–बाजारों के मध्य पारस्परिक निर्भरता होती है और व्यापार किसी देश की सीमाओं में प्रतिबन्धित न रहकर विश्व–व्यापार में निहित तुलनात्मक लागत–लाभ दशाओं का विदोहन करने की दिशा में अग्रसर होता है। दूसरे शब्दों में वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे विश्व के किसी एक हिस्से में होती घटनायें निर्यात आदि क्रियायें दुनिया के दूसरे हिस्सों को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करती हैं। वैश्वीकरण का सम्बन्ध अर्थव्यवस्था के क्षेत्र से है, जिससे 'मुक्त–व्यापार' की सम्भावनाओं को बढ़ाने में सहायता मिलती है, विनियोग व वित्त के प्रवाहों में और अधिक वृद्धि होती है तथा देश के निर्यात व्यापार को बढ़ावा मिलता है। वैश्वीकरण का उद्देश्य विश्व–अर्थव्यवस्था को संरचनात्मक रूप से एक–दूसरे पर अधिक निर्भर कराना है, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय शब्द के स्थान पर 'विश्व' की धारणा को अधिक बल मिल सके, जो अधिक स्वीकार्य तथा न्यायोचित भी है।

2.वैश्वीकरण के मुख्य तत्व :–

– व्यापार प्रतिबंधों को कम करना ताकि वस्तुओं और सेवाओं का आवक–जावक निर्बाध गति से हो सके।
– एक ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाये, जिससे विभिन्न देशों के बीच पूँजी का स्वतन्त्र से प्रवाह हो सके।
– ऐसा वातावरण विकसित करना, जिससे प्रौधोगिकी का स्वतन्त्र रूप से प्रवाह हो सके।

– ऐसी व्यवस्था विकसित करना, जिससे विश्व के विभिन्न देशों के मध्य श्रम का निर्बाध आवागमन हो सके।

3. वैश्वीकरण के प्राप्त अवसर :–

वैश्वीकरण की शुरूआत से अब तक भारत के विदेशी व्यापार का विविधीकरण हुआ है और अब बहुत से 'उत्पाद' तथा 'सेवायें' भारत से विभिन्न देशों को निर्यात किये जाते हैं। अर्थव्यवस्था के कई क्षेत्रों में, विशेषकर 'सेवा क्षेत्र' में निर्यात सेवाओं की अपार सम्भावनायें मौजूद हैं, जिनमें वृद्धि करके हम अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा सकते हैं। भारत को इस विस्तृत क्षेत्र में 'तुलनात्मक लाभ' प्राप्त है और देश इसका लाभ उठा सकता है। जरूरत इस बात की है कि उन सेवाओं को पहचाना जाये, जिनका निर्यात करके अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकती है किन्तु यहाँ यह तथ्य भी स्मरणीय है कि बिना समुचित औधोगिक विकास के सेवा–क्षेत्र का सतत् विकास सम्भव नहीं है, दोनों क्षेत्र एक–दूसरे के पूरक हैं। व्यापक दृष्टिकोण से भी किसी विकासशील राष्ट्र के विकसित राष्ट्र बनने में औधोगिक प्रगति सर्वाधिक सहायक होती है। हमारे जैसे बहुल जनसंख्या वाले देश में इस क्षेत्र का विस्तार न केवल विश्व–व्यापार में हमारी हिस्सेदारी बढ़ायेगा न बल्कि रोजगार का सृजन भी करेगा जो हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है।

भारतीय–व्यापार

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम तथा श्री वाई०एस० राजन द्वारा लिखित पुस्तक ''India. २००२.Avision for the New Millennium'' में यह विश्वास व्यक्त किया गया है कि अगर भारत प्रौधोगिकी का प्रभावपूर्ण तरीके से इस्तेमाल करता हो और सभी क्षेत्रों में लगन व तत्परता से कार्य करता है तो वह सन् २०२० तक एक विकसित राष्ट्र बन सकता है तथा उसकी गिनती विश्व की पांच बड़ी आर्थिक शक्तियों में हो सकती है।

अर्थव्यवस्था के अभी कई क्षेत्र ऐसे है, जिनमें विकास की असीम सम्भावनायें मौजूद हैं। उनमें से कुछ प्रमुख क्षेत्र निम्नवत हैं :-

कृषि क्षेत्र

कृषि का क्षेत्र ऐसा है जिसमें उत्पादकता तथा कार्यकुशलता को बढ़ाकर निर्यात संवर्धन में वृद्धि की जा सकती है किन्तु एक सतत् कृषि निर्यात नीति के अभाव तथा पूर्ति पक्ष की ओर से उत्पन्न

होने वाले अवरोधों के कारण कृषि तथा कृषिजनित उत्पादों के निर्यात में उच्चावचन होते रहें हैं इसका परिणाम यह हुआ कि कुल निर्यात में कृषि तथा कृषि जनित उत्पादों का हिस्सा काफी कम है और जिसमें वृद्धि की असीम सम्भावनायें मौजूद हैं। आवश्यकता इस बात की है कि एक उचित कृषि नीति बनाकर तथा उनको क्रियान्वित करके उन सम्भावनाओं से पूरा लाभ उठाया जाये।

निर्माण क्षेत्र

निर्माण क्षेत्र में निर्यात की भरपूर क्षमतायें तथा सम्भावनायें मौजूद है जिनका उपयोग करके भारत निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकता है। वास्तव में पिछले एक दशक में निर्माणकारी उधोग काफी तेजी से आगे बढ़ा है और कुछ उत्पादों के सम्बन्ध में अपनी गुणवत्ता के कारण उसने अपनी विश्व–व्यापी पहचान बनायी है। भारतीय उधमियों ने विदेशों में अपनी निर्माणकारी इकाईयाँ भी स्थापित की हैं। इसके साथ–२ इसके निर्यात से रोजगार की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है।

वस्त्र उद्योग

विश्व कपड़ा बाजार में भारत की हिस्सेदारी बढ़ने की पर्याप्त सम्भावनायें हैं इसके साथ ही इस क्षेत्र में रोजगार के अवसरों का भी सृजन हो रहा है अपनी गुणवत्ता तथा कार्यकुशलता में वृद्धि करके भारतीय वस्त्र उद्योग निर्यात को बढ़ाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ऐसा करना आवश्यक भी है क्योंकि यह उद्योग न केवल भारत का प्राचीन उद्योग है बल्कि रोजगार की दृष्टि से भी इसमें अपार क्षमतायें हैं।

रत्न तथा आभूषण उद्योग

रत्न तथा आभूषण उद्योग में भी निरन्तर प्रगति विद्यमान है। यद्यपि यह उद्योग भी वस्त्र उद्योग की तरह भारत का परम्परागत उद्योग रहा है लेकिन अतीत में इसको विकसित करने के कोई विशेष प्रयत्न नहीं किये गये। पिछले कुछ समय में सरकार ने घरेलू माँग तथा इसकी निर्यात की सम्भावनाओं को परखते हुए इसके विकास के लिए कदम उठायें है और इस उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए उसके प्रयास जारी हैं। वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के रत्न तथा आभूषणों की माँग में निरन्तर वृद्धि हो रही है क्योंकि भारतीय निर्यातक विदेशी लोगों की रूचि का ध्यान रखते हुये उसमें इच्छित परिवर्तन कर रहे हैं। कुल मिलाकर देखा जाये तो रत्न तथा आभूषण उद्योग में भी अपार सम्भावनायें मौजूद हैं।

उपसंहार :–

वैश्वीकरण के द्वारा अर्थव्यवस्था को विकासोन्मुख तथा स्पर्धात्मक बनाने के लिए एक बात की नितान्त आवश्यकता है कि उसके हर क्षेत्र को उत्पादक बनाया जाये। बिना उत्पादकता के वृद्धि किये हम अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर विकसित देशों से मुकाबला नहीं कर सकते और वैश्वीकरण तथा मुक्त व्यापार से उत्पन्न होने वाले लाभों को प्राप्त नहीं कर सकते। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए संगठनात्मक ढाँचे को मजबूत बनाना होगा, जिससे उत्पादन लागतों में कमी करके विश्व–स्तर पर प्रतियोगिता का सामना किया जा सके।

भारत में आर्थिक सुधारों के अन्तर्गत वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप निर्यात–व्यापार की सम्भावनाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आवश्यकता इस बात की है कि निर्यात की और सम्भावनाओं को तलाश किया जाये, जिससे उसमें वृद्धि करके न केवल विदेशी व्यापार के घाटे को पूरा किया जा सके बल्कि उसमें आधिक्य की स्थिति उत्पन्न हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.Anne Krueger : Economic Policy References
2.Charan. D Wadhwa : Econimic Reforms in India and the Market Economy.
3.Dunning, J.H. And A. Khalil Hamdoni : The New Globalism and Developing Countries.
4.Journal of World Trade.
5.Economic Survey.
6.Business World
7.Economic Times.

अंशु भारद्वाज
पीएच.डी. (अर्थशास्त्र)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org